Topic 1 :– सी-डोम रक्षा प्रणाली

इजराइली सेना के द्वारा पहली बार दक्षिणी शहर इलियट के नजदीक देश के हवाई क्षेत्र में प्रवेश करने वाले एक "संदिग्ध" लक्ष्य (Suspicious Target) को अपनी रक्षा प्रणाली सी-डोम (C-DOM) के द्वारा नष्ट कर किया।

यह रक्षा प्रणाली आयरन डोम का नौसैन्य संस्करण है

जिसे सार 6-श्रेणी के कार्वेट, जर्मन निर्मित युद्धपोतों पर स्थापित किया गया है।

सी-डोम प्रणाली, आयरन डोम के समान इंटरसेप्टर का उपयोग करती है।

इसका विकास क्यों किया गया :– हमास और फिलिस्तीन समर्थक देश लगातार इजरायल के ऊपर दबाव बनाते रहते हैं और हमले करने का प्रयास करते रहते हैं जिससे अपने देश की सुरक्षा के लिए इजरायल के द्वारा दुनिया का सबसे उन्नत रक्षा प्रणाली तकनीक आयरन डोम का विकास किया गया

आयरन डोम :–

एक विशेष प्रकार का छोटी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाला एयर डिफेंस सिस्टम है, जिसमें एक रडार और तामिर (Tamir) इंटरसेप्टर मिसाइल का प्रयोग किया जाता हैं।

रॉकेट, तोपखाने , मोर्टार, विमान, हेलीकॉप्टर और मानव रहित हवाई वाहनों के विरूद्ध किया जाता है।

सी-डोम आयरन डोम वायु रक्षा प्रणाली का एक नौसैनिक संस्करण है। जहाज पर लगी इस रक्षा प्रणाली का इस्तेमाल समुद्र में रॉकेट और मिसाइल हमलों से बचाव करने में किया जाता है।

Result

Topic 2:– हिंद महासागर अवलोकन प्रणाली (IndOos)

चर्चा में क्यों -

इस प्रणाली को भारत और अमेरिका द्वारा विकसित किया गया है तथा इस अवलोकन प्रणाली (IndOOS) को फिर से सक्रिय करने का निर्णय दोनों राष्ट्रों ने लिया है।

इंडियन ओशन ऑब्जर्विंग सिस्टम (IndOOS) :–

- इसकी स्थापना 2006 में किया गया था।
- यह एक बहु-प्लेटफॉर्म दीर्घकालिक अवलोकन प्रणाली के रूप में काम करती है।
- इस प्रणाली की मदद से मौसम के पूर्वानुमान और वायुमंडलीय डाटा एकत्रित करने में आसानी होती है
- यह एक खास प्रकार की प्रणाली है. जिसकी मदद से मौसम के पूर्वानुमान और वायुमंडलीय डाटा एकत्रित किया जाता है।

क्या क्या कार्य करेगा :–

इसका प्रयोग :– सैटेलाइट रिमोट सेंसिंग तापमान, समुद्र की सतह की स्थित, समुद्र में चलने वाली हवाओं, समुद्र की लवणता और समुद्र के रंग और समुद्रि सतह के मानचित्र से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

IndOOS में फ्लोट्स, ड्रिफ्टर बॉय और मूर्ड बॉय जैसे उपकरणों का एक समूह भी है जो समुद्र में लवणता, तापमान, समुद्री जल की धाराओं और ऊपर के वातावरण की आर्द्रता, हवाओं जैसी विशेष स्थितियों पर भी नज़र रखता है और इससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

हिंद महासागर :–

यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासगर है।

हिंद महासागर सतह पर उपलब्ध जल का लगभग 20 प्रतिशत भाग को समाहित किए हुए है।

इसकी सीमा :–

उत्तर में भारतीय उपमहाद्वीप से

पश्चिम में पूर्व अफ्रीका

Result Mitra

पूर्व में चीन, सुंडा द्वीप समूह और ऑस्ट्रेलिया

दक्षिण में दक्षिण ध्रुवीय महासागर

हिंद महासागर का भारत के लिए प्रयोग :–

इस महासागर की मदद से भारत को दक्षिण पूर्व एशिया,
दक्षिण एशिया, अफ्रीका, पश्चिम एशिया और ओशिनिया तक पहुँच सुनिश्चित होती है।

यह महासागर मछली पकड़ने , खनिज संसाधनों और अन्य समुद्री उद्पादको के लिये एक मूल्यवान स्रोत है।

Topic 3 :– "नेप्टिस फ़िलायरा" तितली की नई प्रजाति

चर्चा में क्यों :– हाल ही में तितली की एक नई प्रजाति की खोज की गई है जिसको ‘‘नेप्टिस फ़िलायरा" ।

तितली की यह नई प्रजाति टेल वैली वन्यजीव अभयारण्य में खोजी गई है।

नेप्टिस फ़िलायरा:–

नेप्टिस फ़िलायरा तितली की दुर्लभ प्रजाति के रूप मे जानी जाती है।

सबसे पहले इस तितली का उल्लेख रूस के एम मेनेट्रिएस ने वर्ष 1859 में किया था।

इसे लंबी-लकीर नाविक के रूप में भी जाना जाता है।

नेप्टिस फ़िलायरा की अन्य प्रजातियाँ भी हैं जो पूर्वी साइबेरिया, कोरिया, जापान, मध्य और दक्षिण-पश्चिम चीन सहित पूर्वी एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

हाल ही में शोधकर्ताओं द्वारा अरुणाचल प्रदेश के सुबनसिरी जिले में स्थित तितली की नई प्रजाति "नेप्टिस फ़िलायरा" की खोज की गई है।

टेल वैली वन्यजीव अभयारण्य:

- इसकी स्थापना वर्ष 1995 में हुई थी। यह अभयारण्य अरुणाचल प्रदेश के सुबनसिरी जिले में स्थित है।
- अभयारण्य 2400 मीटर ऊँचे टैली नामक पठार पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 337 वर्ग किमी है।
- इस अभयारण्य कई प्रकार की पुष्प और जीवों की प्रजातियों के लिए भी लोकप्रिय हैं।

टेल वैली एक वन्यजीव अभयारण्य के साथ ही एक जैव विविधता हॉटस्पॉट भी है यह जीरो घाटी से उत्तर पूर्व दिशा की ओर 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
हाल ही में यह चित्र चर्चा में रहा क्योंकि यहां तितली की 171 प्रजातियां पाई गई हैं।

Result Mitra